











# सम्पादकीय

# चार मैच और इंटरनेशल रैकिंग में 57वें पायदान की छलांग

भारत-इलंड टेस्ट सीरीज में पहली यशस्वी जायसवाल की इंटरनेशनल रैकिंग 69 थी, जो चार मैचों के बाद 12 पर पहुंच चुकी है। पिछले चार टेस्ट मैचों में यशस्वी ने 655 रन बनाए हैं। बाएं हाथ के धूंधलर बल्लेबाज यशस्वी जायसवाल भारतीय क्रिकेट की नई रन मशीन बनकर उभरे हैं। भारत-इंग्लैंड टेस्ट सीरीज में चार मैचों में यशस्वी ने जा सकता है। इन मैचों की 15 पारियों में उन्होंने 971 रन बना दिए हैं। उनका औसत 68.91 है, जिसमें तीन शतक और तीन अर्धशतक शामिल हैं। वो कितनी तेजी से बांड्री निकालते हैं, यह इस बात से पता चलता है कि उन्होंने 15 पारियों में 103 चौके और 26 छक्के लगाए हैं। जायसवाल के दोहरे शतक की बदौलत भारत ने राजकोट टेस्ट



भी दर्ज की थी। इंगलैंड को 434 रनों से हराया, जबकि इससे पहले भारत की सबसे बड़ी जीत वर्ष 2021 में न्यूजीलैंड के खिलाफ हुई थी, जब उसने न्यूजीलैंड को 372 रनों से हराया था। भारत ने वर्ष 2015 में साउथ अफ्रीका को 337 रन, वर्ष 2016 में न्यूजीलैंड को 321 रन और वर्ष 2008 में ऑस्ट्रेलिया को 320 रनों से शिकास्त दी थी। यशस्वी जायसवाल की कहानी हम सबको पता है कि कैसे वो मात्र 12 साल की उम्र में उत्तर प्रदेश से मुंबई आ गए थे। बेहद कठिन परिस्थितियों में उन्होंने अपने क्रिकेट करियर को बनाया। यहां तक ठेले पर गोलगप्पे बेचे और मैदान पर रात को कई बार उहाँ सोना पड़ा, लेकिन मात्र 22 साल वें यशस्वी जायसवाल ने ही केवल खुद को साबित किया है, बल्कि वो अब टीम इंडिया के विराट कोहली जैसे स्तंभ बन गए हैं। 22 साल की उम्र में सर्वाधिक चार दोहरे शतक लगाने का रिकॉर्ड ऑस्ट्रेलिया के सर डॉन ब्रैडमैन के नाम है, जबकि तीन दोहरे शतक दक्षिण अफ्रीका के ग्रैम स्पिध ने लगाए थे। भारत की ओर से यशस्वी जायसवाल के अलावा विनोद कांबली ने 22 साल की उम्र में दो दोहरे शतक लगाए थे, जिस तरह से यशस्वी जायसवाल आगे बढ़ रहे हैं तो लग रहा है कि वो कई बड़े कीर्तिमान स्थापित करने वाले हैं। भारत के लिए अगर वो अगले 10 साल तक यूं ही खेलते रहे तो सचिन तेंदुलकर और विराट कोहली की तरह वो रनों का अंगार लगा देंगे।

इतना फोड़ूंगी न तुझे मैं दिल्ली मेट्रो  
में महिलाओं के बीच जमकर चले  
लात घंसे और थप्पड़

सोशल मीडिया पर अक्सर दिल्ली मेट्रो में महिलाओं की लड़ाई का वीडियो देखने को मिलता है। सीट के लिए महिलाओं को आपस में लड़े हुए देखा जाता है। अब एक बार फिर महिलाओं की लड़ाई का वीडियो वायरल हो रहा है। इस को धक्का दे देती है। इसके बाद दूसरी महिला गेट पर खड़ी महिला को मारने लगती है और उसके कंधे पर थप्पड़ मारती है। फिर जवाब में पहली महिला भी दूसरी को थप्पड़ जड़ देती है। इस दौरान वह कही रही है कि मेरे ऊपर हाथ उठाती



और मार्पीट कर रही हैं। मेट्रो में लोग महिलाओं का बीच-बचाव करने की जगह चुपचाप तमाशा देखत रहे हैं और अपने मोबाइल में लड़ाई का वीडियो बना रहे हैं। मार्पीट वाले वीडियो में आप देख सकते हैं कि सीट को लेकर दो महिलाओं के बीच बहस हो रही है। बहस इतनी बढ़ जाती है कि हाथपाई तक मामला पहुंच जाता है। वीडियो में मेट्रो के गेट के पास एक महिला खड़ी है और सीट पर बैठी दूसरी महिला से कहती

**बुजुर्ग बाइडन की बेचारगी बनाम ट्रम्प से 'महामानव' जैसी उम्मीदें**

प्रेस कानक्स में उनके तौर-तरोंके व उनकी फिटनेस को देखिए, ये सब दूसरे कार्यकाल के लिए उनकी पात्रता के बारे में सार्वजनिक चिंताओं को बढ़ाते हैं, जिसके अंत में वह 86 वर्ष के हो जाएंगे। शारीरिक भाव-भंगिमाओं से वह खुद को युवा दिखाने की कोशिश जरूर करते हैं, लेकिन जो चीजें स्वाभाविक रूप

इसलिए, क्याकि यह प्रतीत होता है कि बढ़ती उम्र ने उनके गुस्से को और बढ़ा दिया है, जिससे वह परंपरागत राजनीति को रौंदेंगे वाले महामानव ज्यादा दिखने लगे हैं। दूसरी ओर, बाइडन के अपने उदार प्रशंसक हैं, जो तर्क दे सकते हैं कि शारीरिक-मानसिक कमज़ोरियां भले उनकी सार्वजनिक मौजूदगी में

की चौका देने वालों बेतरतबी औररुंप का कच्चा यथार्थवाद एक पुरानी कहावत की सीमा को उजागर करता है कि जितना अधिक शरीर बूढ़ा होता है, आप उतने ही समझदार होते हैं। यह कहावत दरअसल पूर्व से ली गई है, जहां बुद्धिमान लोग हमेशा एक खास क्षेत्र के माने जाते थे। जब चीनी साम्यवाद

गथनों के बावजूद बनी रही। तिहास बताता है कि क्रांतियां तभी एरिपक्व होती हैं, जब उन्हें पुराने गतिकारियों द्वारा पोषित किया जाता है। जाहिर है कि उम्र का सपना महत्व होता है और पूर्व ने इस चीज़ को हमेशा महत्व दिया है। वह हमेशा से ही बुद्धिमान बुजुर्गों ने पक्षपाती रहा। हमारे देश में थे, जो 77 वर्षों दूप से कुछ हीमहीने कम थे। 81 साल की उम्र में अपने सपनों का पीछा करने गाले आडवाणी के रास्ते में बाधा बनकर उम्र खड़ी नहीं हुई, बल्कि एक 'यात्रा' थी, जिसने उन्हें विफल बना दिया। शायद हमने आदर्शवादियों की अपेक्षा अनुभवी लोगों को प्राथमिकता दी। हो सकता है कि



**चुनावी वर्ष में रियल एस्टेट की चमक से रोजगार बढ़ने और अर्थव्यवस्था को गति मिलने की उम्मीद**

प्रॉपर्टी की वैश्विक सेवा कंपनी जेएलएल के मुताबिक, पिछले साल हर तिमाही में औसतन 65,000 इकाइयां बिकीं और पहले नौ महीनों में 2,23,905 लॉन्च हुए, जो एक रिकॉर्ड है। यह संख्या साल के अंत तक लगभग 2,80,000 रही होगी। इन आंकड़ों के आधार पर कहा जा रहा है कि इस साल बुल 2,90,000 आवासीय इकाइयां लॉन्च हो सकती हैं। जेएलएल का कहना है कि होम लोन ब्याज दरों के ज्यादा होने तथा महंगाई में बढ़ोत्तरी के बावजूद ग्राहक नई

अब काफी बिक रहे हैं। जिस गंभीरता से निवेशक रियल एस्टेट में धन लगा रहे हैं, उससे पता चलता है कि उनका भरोसा कायम है। रियल एस्टेट में सरकारी पहल के अलावा, टेक्नोलॉजी के बढ़ते इस्तेमाल, विदेशी करार वरौदर इसे मजबूत बना रहे हैं। नई टेक्नोलॉजी के कारण अब स्मार्ट होम थड़ल्ले से बन रहे हैं। नए उपकरणों से हो जाने से वेयर हाउसिंग में भी तेजी आएगी। बंगलूरु, चेन्नई, पुणे, दिल्ली-एनसीआर, कालकाता, मुंबई-ये वे शहर हैं, जहां कमशियल स्पेस की मांग बढ़ी है और 2024 में भी बढ़ती रहेगी। हालांकि 2024 चूनावी वर्ष है। इसके बावजूद उमाद है कि अर्थव्यवस्था छह फीसदी से भी ज्यादा रफ्तार से बढ़ेगी। इस

आरल कंसर, मुंह का एक धातक बीमारी है जो जीभ, अंदरूनी गाल, ऊपरी और निचले जबड़े के हिस्से को प्रभावित करती है। मुंह के केंसर के शुरुआती चरण दर्द रहित और लक्षणहीन होते हैं, इसलिए उनका निदान करना बहुत चुनौतीपूर्ण हो जाता है। सभी संभावित उपचारों को पूरा करने और अंतरराष्ट्रीय दिशानिर्देशों का पालन करने के बाद भी, सफलता (पांच साल तक जीवित रहने) की संभावना कम रहती है। कई केंसर पीड़ित उच्च स्तर की विकृति और दर्द के कारण मौत का शिकार भी



सही मायनों में रियल एस्टेट का साल था और वर्षों बाद उसने अपनी चमक बिखेरी। यह चमक इस साल भी बरकरार है। लगातार रियल एस्टेट कंपनियों के नए लॉन्च की खबरें सामने आ रही हैं। पिछले साल देसी-विदेशी निवेशकों ने इसमें जमकर पैसा लगाया, जिसका असर भी दिखा। आंकड़े बता रहे हैं कि पिछले साल कुल 5.1 अरब डॉलर का निवेश इस क्षेत्र में हुआ। इनमें से दो अरब डॉलर से भी ज्यादा रकम जपान की खरीद में लगाई गई, यानी इस साल या अगले साल उनमें निर्माण कार्य होंगे। इससे बड़े पैमाने पर इस क्षेत्र में रोजगार मिलने की उम्मीद जताई जा सकती है। प्रॉपर्टी की वैश्विक सेवा कंपनी जेएलएल के मुताबिक, पिछले साल यदि रिजर्व बैंक अपनी अगली बैठक में ब्याज दरों में कटौती करेगा, तो उसका असर मकानों तथा व्यावसायिक संपत्ति की खरीद पर भी पड़ेगा। वर्ष 2023 में एक और बात देखने में आई कि ग्राहक बन रहे मकानों में भी निवेश कर रहे हैं। यह एक अच्छा ट्रैंड है, जो बताता है कि आने वाले समय में मकानों की बिक्री लगातार बढ़ेगी। इसके अलावा, महंगे और लज्जरी सेगमेंट के मकानों की बिक्री खूब बढ़ी है। डेढ़ करोड़ रुपये की कीमत तक के मकानों की बिक्री में 22 फीसदी तथा लज्जरी मकानों, जो तीन करोड़ रुपये से भी ज्यादा कीमत के हैं, की बिक्री में 83 फीसदी की बढ़ोत्तरी हुई है। यह देश की बेहतर आर्थिक स्थिति का संकेत

हो रहे हैं। ऐसे मकान बनाना भी संभव हो गया है, जहां ऊर्जा की खपत कम होती है और ग्राहकों को ये पसंद भी आते हैं। अंतरराष्ट्रीय एजेंसी के पैमाने का कहना है कि 2024 भारतीय रियल एस्टेट के लिए एक उत्साहपूर्ण वर्ष होगा और पिछले साल की तुलना में 10 से 15 फीसदी तक की बढ़तीरी होगी और आवासीय सेक्टर में तीन लाख यूनिट बिक सकते हैं। व्यावसायिक क्षेत्र में ऑफिस स्पेस की जो मांग कोविड के कारण घट गई थी, अब तेजी से बढ़ रही है तथा आगे और बढ़ने की उमीद है। अब न केवल वर्क प्लेस की मांग बढ़ी है, बल्कि मॉल तथा शॉपिंग कॉम्प्लेक्सों की भी। यानी आने वाले समय में कमशियल रियल एस्टेट को और मिलती है। तेजी से शहरीकरण के चलते नई पीढ़ी अब रियल एस्टेट में दिलचस्पी ले रही है। इससे यह संभावना दिख रही है कि न केवल 2024 में, बल्कि आगे भी रियल एस्टेट सेक्टर में तेजी आएगी। विशेषज्ञों का मानना है कि 2025 में रियल एस्टेट क्षेत्र का आकार 650 अरब डॉलर का होगा, जो देश की प्रगति में हाथ बंटाएगा। रियल एस्टेट का देश के कुल जीडीपी में 7.3 फीसदी का हिस्सा है और यह रेलवे के बाद दूसरा सबसे बड़ा रोजगार प्रदाता है। इससे सरकार को टैक्स के रूप में बहुत बड़ी राशि मिलती है। इसके विकास से लोहा, सीमेंट, फर्निशिंग के सामान, बिजली के सामान,



